अंतहीन तबाही : इजराइल-हमास संघर्ष और फिलिस्तीन

द हिंदू

पेपर-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध)

हमास द्वारा इजराइल पर किए गए क्रूर हमले, जिसमें लगभग 1,400 लोग मारे गए, के तेरह दिनों बाद घिरे हुए और निस्सहाय गाजा पर इजराइल के हवाई हमले बेपनाह निर्दयता के साथ जारी हैं। इन हवाई हमलों में सैकड़ों बच्चों सहित 3,785 फिलिस्तीनी मारे गए हैं। अब जबकि इजराइल लगभग दस लाख लोगों को गाजा के उत्तरी इलाके के आधे हिस्से को खाली करने का आदेश देने के बाद जमीनी हमले की तैयारी में गाजा के साथ लगी अपनी सीमा पर सैनिकों और टैंकों को इकठ्ठा कर रहा है, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने इस यहूदी राष्ट्र के "अपनी रक्षा के अधिकार" के प्रति अपना समर्थन जताने के लिए वहां की यात्रा की। श्री बाइडेन की यात्रा गाजा के एक अस्पताल पर हुए हमले में कम से कम 500 लोगों के मारे जाने के कुछ ही घंटों बाद हुई। फिलिस्तीनियों का कहना है कि हजारों लोगों को आश्रय देने वाले इस अस्पताल पर इजराइली जेट विमानों ने हमला किया, जबकि इजराइल ने दावा किया कि फिलिस्तीनी आतंकवादियों द्वारा दागे गए रॉकेट की वजह से वहां विस्फोट हुआ। युद्ध में जहां सच्चाई सबसे पहला शिकार बनती है, वहीं एक छोटे व नाकाबंदी वाले इलाके में प्रतिशोध से भरे इजराइल की नासमझी भरी बमबारी उसके 2.3 मिलियन लोगों को जिंदगी और मौत के बीच के अकल्पनीय संघर्ष की ओर धकेल रही है। उधर, शक्तिशाली राष्ट्र या तो दूर से तमाशा देख रहे हैं या फिर इजराइल के अभियान का समर्थन करने में मशगूल हैं। श्री बाइडेन ने एलान किया कि इजराइल ने मानवीय सहायता से भरे लगभग 20 ट्रकों को मिस्र से गाजा जाने की इजाजत दी है। वैसे तो किसी भी सहायता का स्वागत है, लेकिन जैसाकि इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रेड क्रॉस और रेड क्रिसेंट सोसाइटीज ने कहा है, 20 लाख लोगों के लिए 20 ट्रक की सहायता "समुद्र में एक बूंद" की मानिंद है।

हमास द्वारा 7 अक्टूबर को सब्त के दिन इजराइल में किए गए हमले की बेहिचक निंदा की जानी चाहिए। साथ ही, हमास से लड़ने के नाम पर गाजा को सामूहिक रूप से दंडित करने और वहां अंधाधुंध बमबारी करके रोजाना सैकड़ों लोगों को मारने की हरकत इजराइल को कहीं से भी हमास से बेहतर नहीं बनाती है। इसके अलावा, फिलिस्तीनियों के प्रति इजरायली राज्य के इस नजरिए से न तो इजरायल की सुरक्षा बेहतर हुई है और न ही हितधारकों को इस संकट का हल तलाशने में मदद मिली है। इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू, जिनकी निगरानी में देश का यह सबसे बड़ा सुरक्षा संकट सामने आया, ने कहा है कि वह हमास को "कुचल" देंगे। लेकिन इजराइल के पास आसान विकल्प उपलब्ध नहीं है। गाजा पर फिर से कब्जा करने से लंबे समय तक शहरी युद्ध की रस्साकशी बनी रहेगी। फतह और फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन की विफलताओं से उपजी शून्यता का फायदा उठाकर हमास प्रमुखता से उभरा। अगर इजराइल गाजा में हमास के दबदबे को कम करने में कामयाब हो जाता है, तब भी कोई नहीं जानता कि आगे क्या होगा क्योंकि फिलिस्तीन, जहां इजराइल का कब्जा चल रहा है, का सवाल अनसुलझा ही रहेगा। एक आदर्श दुनिया में, "मानवाधिकारों पर केंद्रित विदेश नीति" के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताने वाले राष्ट्रपति के शासन-काल में सबसे ताकतवर देश संयुक्त राज्य अमेरिका को अपने सहयोगी की हरकतों से रंज होना चाहिए और उसे तेल अवीव पर बमबारी बंद करने व क्षेत्रीय शक्तियों को शामिल करते हुए बातचीत शुरू करने का दबाव बनाना चाहिए। लेकिन चूंकि ऐसा होने की फिलहाल संभावना नहीं है, लिहाजा इजराइल बेखौफ अपने हमलों को जारी रखने को तैयार है और इससे लाखों फिलिस्तीनियों की परेशानियां बढ़ जायेंगी।

हमास कौन है?

हमास एक फिलिस्तीनी राजनीतिक और उग्रवादी संगठन है जो वर्तमान में दो फिलिस्तीनी क्षेत्रों में से एक, गाजा पट्टी पर शासन करता है। हालाँकि इसका मुख्यालय गाजा शहर में है, लेकिन इसकी उपस्थिति वेस्ट बैंक में भी है, जहाँ फतह का नियंत्रण है।

योम किप्पुर युद्ध क्या था?

- योम किप्पुर युद्ध, जिसे रमजान युद्ध, अक्टूबर युद्ध, 1973 अरब-इजरायल युद्ध या चौथे अरब-इजरायल युद्ध के रूप में भी जाना जाता है, 6 से 25 अक्टूबर, 1973 तक इजराइल और मिस्र और सीरिया के नेतृत्व में अरब राज्य गठबंधन के बीच लड़ा गया एक सशस्त्र संघर्ष था।
- यहूदी कैलेंडर के सबसे पवित्र दिन, योम किप्पुर, जिसे प्रायश्चित का दिन भी कहा जाता है, इजराइल पर मिस्र और सीरिया की हमलावर सेनाओं ने हमला कर दिया था।
- मिस्र और सीरियाई सेनाओं ने 1967 में तीसरे अरब-इजरायल युद्ध के दौरान इजराइल से खोए हुए क्षेत्र को वापस पाने की उम्मीद में, योम किप्पुर पर इजराइल के खिलाफ एक समन्वित हमला शुरू किया।
- 1973 का युद्ध इजरायल की जीत के साथ समाप्त हुआ लेकिन सभी पक्षों को भारी कीमत चुकानी पड़ी।
- युद्ध ने एक शांति प्रक्रिया शुरू की, जिसके परिणामस्वरूप 1978 में कैंप डेविड समझौता हुआ, जहां इजराइल ने सिनाई प्रायद्वीप को मिस्र को लौटा दिया, और 1979 में मिस्र-इजरायल शांति संधि हुई, जो इजराइल को एक राज्य के रूप में मान्यता देने वाला पहला अरब देश था।
- हालाँकि, सीरिया को युद्ध से कोई लाभ नहीं हुआ और अंत में कोई लाभ नहीं हुआ, जबकि इजराइल ने गोलान हाइट्स पर अपना कब्जा बढ़ा लिया।

संभावित प्रश्न (Expected Question)

प्रश्न : योम किप्पुर युद्ध के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-

1. यह युद्ध 1973 में हुआ था।
2. इसमें अरब गठबंधन की हार हुई थी।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

Que. Consider the following statements in the context of Yom Kippur war-

1. This war took place in 1973.
2. The Arab coalition was defeated in this.

Which of the statements given above is/ are correct?

(a) Only 1
(b) Only 2
(c) Both 1 and 2
(d) Neither 1 nor 2

उत्तर : c

संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्न : इजरायल और फिलिस्तीन का विवाद क्या है? वर्तमान में इजरायल पर हमास का हमले के क्या कारण हैं? चर्चा करें।

उत्तर का दृष्टिकोण:

- उत्तर के पहले भाग में इजरायल और फिलिस्तीन विवाद की चर्चा करें।
- दूसरे भाग में वर्तमान में इजरायल पर हमास का हमले के कारणों की चर्चा कीजिए।
- अंत में आगे की राह दिखाते हुए निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।